AS-2717

B.A. (Hon's) (Fifth Semester) Examination 2013.

HISTORY

Paper : BH 5.3

History of India : 1805 - 1857 A.D.)

Section 'A' खण्ड 'अ'

(1.) 5 नवंबर 1817, (2) इलाहाबाद, (3) आगरा, (4) 1826, (5) त्रिमला (6) जुलाई 1854 (7) 1856, (8) 1816, (9) केशवचंद्र सेन (10) राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम.

खण्ड 'ब' Section 'B'

(11) तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध 1817-18 में हुआ। सन् 1805 के पश्चात् समय मिलने पर भी मराठों ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ नहीं बनाया था। मराठों की पारस्परिक कलह एवं संघर्ष को बताते हुए अपमानजनक सैनिक संधियों को स्पष्ट करना है। इस तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध के परिणामों को विस्तार से वर्णन करना है जिनमें निम्न बिन्दुओं का होना आवश्यक है — (i) मराठों की हार के बाद वे सभी प्रदेश जिन पर भारतीय नरेशों का शासन था, कम्पनी के अधिकार में चले गये। (ii) अमीर खाँ तथा गफूर खाँ की पठान सेनाओं का अस्तित्व समाप्त हो गया। (iii) पिण्डारियों का नाश हो गया क्योंकि मराठों के पतन के बाद उन्हें आश्रय नहीं मिल सका। (iv) मराठा संघ समाप्त हो गया। (v) सिंधिया होल्कर, भागपुर के राजा पराधीन हो गये। पेशवा की पेंशन बंद कर दी गई। (vi) मराठा साम्राज्य समाप्त कर दिया गया। (vii) मराठा शक्ति का अंत हो गया।

(12.) लॉर्ड विलियम बैंटिंक का शासन आंतरिक सुधारों के लिए प्रसिद्ध है। वह सुधारवादी तथा उदार विचारोंवाला व्यक्ति था। इस भूमिका देते हुए उसके समस्त सुधारों का वर्णन करना है।

(a) प्रशासनिक सुधार, प्रशासन में भारतीयों की नियुक्ति, लगान संबंधी व्यवस्था

-याचिक सुधार, आर्थिक सुधार, सामाजिक सुधार, शिक्षा संबंधी सुधार, जन हितोपयोगी कार्य, इत्यादि का वर्णन करते हुए विवेचना करनी है।

(13) भारत - अफगान संबंधों की प्राचीन काल में स्थिति भूमिका में देते हुए प्रथम आंग्ल अफगान युद्ध के कारण और परिणामों का वर्णन करना है। मध्य एशिया के व्यापार में हिस्सा लेने एवं रूसी प्रभाव को रोकने के लिए, एवं भारत अफगान सीमा की सुरक्षा के लिए अफगानिस्तान पर नियंत्रण करना आवश्यक हो गया था।
कारण - ① अफगानिस्तान की आंतरिक स्थिति ② एशिया में रूस की प्रगति, ③ ईरान और रूस की मित्रता ④ लार्ड आकलैंड की अफगान नीति, ⑤ आकलैंड की अग्रगामी नीति ⑥ प्रतिक्रिया एवं विद्रोह।
परिणाम - ① साम्राज्यवादी, अनैतिक, दुर्भावनापूर्ण युद्ध था ② कंपनी का डेढ़ करोड़ रुपया नष्ट हुआ ③ 20,000 सैनिक मारे गए। ④ अफगानों से शत्रुता हो गई ⑤ राजनैतिक दृष्टि से सर्वाधिक हानिकारक युद्ध था।

(14.) अफगानिस्तान की तरफ से भारत पर अनेकों आक्रमण पूर्व में हुए। मध्य एशिया एवं रूस की स्थिति को देखते हुए प्रथम अफगान युद्ध हुआ। इस समय आकलैंड ने अग्रगामी नीति का पालन किया था। इसके बाद एलेनबरा फरवरी 1842 में भारत आया। इस समय अंग्रेजों की तरफ से कुशल अकर्मण्यता की नीति (The policy of Masterly inactivity) को लागू की गई जो लार्ड एलेनबरा से प्रारंभ होकर लार्ड नार्थब्रुक के समय तक चलती रही। इस प्रकार 1839 से 1857 तक की आंग्ल - अफगान नीति या संबंधों की विवेचना एवं उसके परिणामों की व्याख्या करनी है।

(15.) प्रथम आंग्ल सिख युद्ध में पराजित होने के बाद भी सिख शक्ति पुनः संगठित हो रही थी। अंग्रेजों द्वारा पंजाब में किये गये सुधारों से सिख संतुष्ट नहीं थे। ~~द्वितीय~~ इसकी भूमिका देते हुए द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध के कारण इस प्रकार थे —

(1) सिखों का राष्ट्रीय अपमान (2) अंग्रेजों द्वारा पंजाब में हस्तक्षेप (3) लाहौर की संधि (4) पंजाब के राज्य प्रशासन में सिख नेताओं के प्रभाव का घटना (5) भैरोंवाल की संधि (6) अंग्रेजों द्वारा सेना में उच्च पद ग्रहण करना (7) अंग्रेजों द्वारा मुसलमानों को उत्तेजित करना (8) सामाजिक सुधार (9) मुल्तान विद्रोह / परिणाम -(1) पंजाब का विलय (2) कोहिनूर हीरा अंग्रेजों को समर्पित करना (3) महाराजा दिलीपसिंह की पेंशन (4) मूलराज को आजीवन कारावास (5) तीन कमिश्नरों के बोर्ड की स्थापना (6) सिख सेना को भंग करना (7) शक्तिशाली पुलिस का पुनर्गठन (8) न्याय विभाग (9) निर्माण कार्य (10) कृषि उन्नति, (11) दुर्गों का निर्माण (12) सीमान्त सेना का गठन

(16) डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार के लिए पांच प्रकार के साधनों या उपायों का प्रयोग किया (1) युद्ध के द्वारा (2) प्रशासनिक अव्यवस्था या कुशासन का आरोप लगाकर (3) क्रय के बदले में अधिग्रहण या Acquisition करके (4) पदों और पेंशनों की समाप्ति करके और (5) गोद लेने की प्रथा का निषेध करके। इन बिन्दुओं को विस्तार देते हुए इसकी आलोचना जिन विद्वानों ने की है उनके कथनों को शामिल करते हुए करनी है।

(17.) लार्ड हेस्टिंग्स के आगमन के समय भारत की स्थिति का वर्णन करते हुए भूमिका देनी है। जैसे कंपनी की स्थिति, सिंधिया की दशा पेशवा, होल्कर, भोंसले की स्थिति, पिंडारियों के अत्याचार, गोरखों की शक्ति व राजस्थान और मध्य भारत की स्थिति। फिर लार्ड हेस्टिंग्स की ~~विदेश~~ आंतरिक नीति एवं बाह्य नीति के अंतर्गत किये कार्यों जैसे नेपाल युद्ध, पिण्डारियों का दमन एवं मराठा, राजस्थान के प्रति नीति को दर्शाना है। इन सभी बिन्दुओं का वर्णन करते हुए लार्ड हेस्टिंग्स के भारत में किये गए कार्यों का वर्णन करना है।